विजयदान देथा की दो कहानियाँ

पगड़ी तो भैंस चर गई

एक गूजर किसी बनिए का कर्ज़दार था। गूजर का दुर्भाग्य कि हर साल कुछ न कुछ अनहोनी होती रही। कर्ज़ चुकाना उसके लिए मुश्किल हो गया। अपने रुपयों की जोखिम देख बनिए ने उस पर मुकदमा दायर कर दिया। अपने हक में जल्दी फैसला हो जाने की नीयत से बनिए ने हाकिम को बीकानेर की एक बढ़िया पगड़ी उपहार में दी।

गूजर ने देखा कि न्याय की इन कचहरियों में रिश्वत से ही काम बनते हैं, तो उसने भी चुपके से अत्यधिक दूध देने वाली एक भैंस हाकिम को नज़राने में दी। हाकिम ने गूजर के हक में फैसला सुना दिया।

न्यायालय में खड़ा बनिया रिश्वत का भेद कैसे प्रकट करता! परन्तु फिर भी उसे इशारे-इशारे में समझाते हुए सिर की पगड़ी को हाथ में लेकर याचना के स्वर में कहा, "अन्नदाता, मेरी पगड़ी की कुछ तो लाज रखिए!"

हाकिम उसके इशारे को समझ गया। वापस वैसा ही जवाब दिया, "सेठजी, तुम्हारी पगड़ी तो भैंस चर गई!"

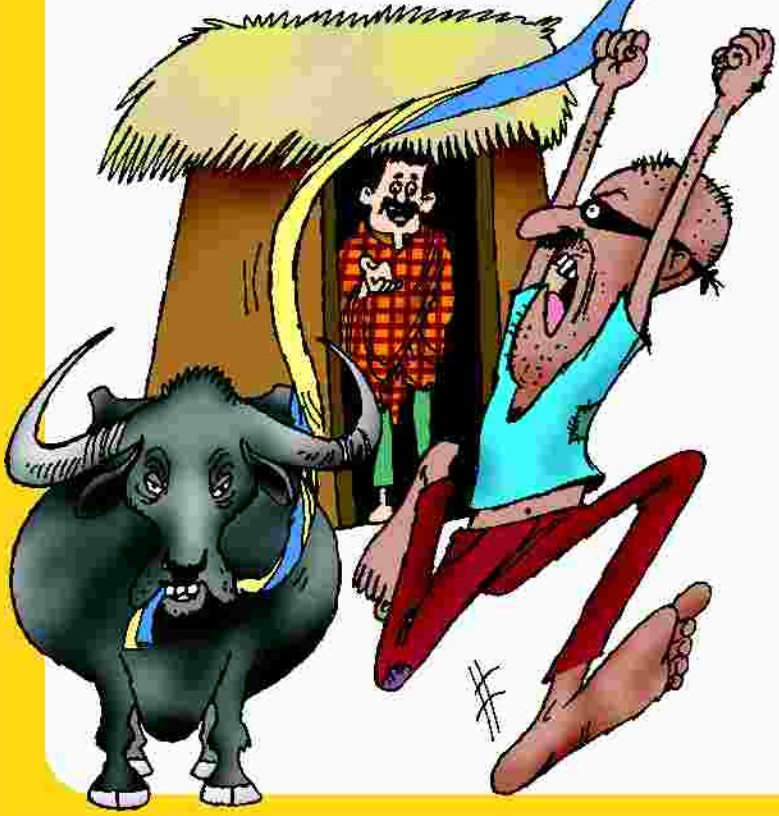

अपूर्व मनुहार

सर्दियों की ढलती रात एक चोर एक ढोली की झोंपड़ी में सेंध लगाकर घुस पड़ा। खटर-पटर से ढोली की आँख खुल गई, तो भी वह चिल्लाया नहीं। गुदड़ी से मुँह निकाल संयत भाव से चोर का रंग-ढंग देखता रहा। झोंपड़ी ठौड़-ठौड़ से नीचे झुक आई थी, इस कारण पाँच-सात थोगे लगे हुए थे। चोर जिधर भी किसी चीज़ की टोह में आगे बढ़ता उसके सिर में टक्कर लग जाती। चोर का सिर भन्ना गया।

आखिर टोह लेते-लेते कैर-सांगरियों की मटकी हाथ लगी। चोर ने अपनी कम्बल बिछाकर सारी मटकी खाली करली। वह गाँठ बाँधने ही वाला था कि ढोली करवट बदलकर कम्बल पर ही लुढ़क पड़ा। चोर ने सोचा कि खींचने से तो वह जग पड़ेगा। स्वतः ही वापस करवट बदलेगा तब फुर्ती से कम्बल खिसका लेगा। पर ढोली ने तो जानकर ही वैसा किया था। चोर को इस तरह प्रतीक्षा करते देखा तो ढोली को सहसा ज़ोर की हँसी आ गई। हँसी सुनते ही चोर ने हड़बड़ाकर भागने की चेष्टा की तो लकड़ी के थोगे से एक और ज़ोर की टक्कर लगी। ढोली ने हँसते-हँसते व्यंग के स्वर में कहा, "यों क्या, कुछ न कुछ तो लेते जाओ!" चोर ने भी वापस वैसा ही जवाब दिया, "क्या खाक लेता जाऊँ? कमाई करने वाला तो तू है। फिलहाल तो अपनी कम्बल छोड़े जा रहा हूँ! तुझ जैसे ही सभी कमाने वाले हो जाएँ तो चोरों को तो भूखों मरना पड़े।" चकमक